

पावरफुल योग से पुराने संस्कारों को समाप्त करें



दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

आज की गुडमार्निंग वण्डरफुल है। नया युग लाने के लिए या उसमें आने के लिए अपने को क्या करने का है? बाबा ने वो पूरा आइना दे दिया है। हरेक बच्चे को अपने बाप से वर्सा लेने का हक है। बाप ऊंचे-से-ऊंचा है, तो वर्सा भी ऊंचा अर्थात् सारे कल्प में वो राजाई चलती रहती है। तो हम कल्प पहले वाले बच्चे जो भाग्य-विधाता से इतना भाग्यवान बने हैं, जो भाग्य बांटा है। वैसे तो सबने अंदर ही अंदर बाबा के मीठे-मीठे बोल सुनते-सुनते दिल में समाया होगा। पुराने संस्कार का कुछ अंश न रहे, इतना योग पावरफुल हो। इतना सच्चा प्यार भरा सम्बन्ध बाबा से हो तो उसी याद की लगन की अग्नि संस्कारों को भस्म कर देती है। जैसे हमारे बाबा के संस्कार हैं, वैसे संस्कार हमारे नहीं बने हैं, तो हम क्या बनेंगे? श्रेष्ठ पूज्य हैं तो श्रेष्ठ पुजारी भी हैं। बाबा जैसा त्याग और तपस्या हो, सेवाधारी भी बनना है तो ऐसे। जैसे हमारे बाबा ने एक स्थान पर बैठे भी सारे विश्व को अच्छी तरह से किरणें दी है। कई पुरानी आत्माओं को घर बैठे किसी भी देश में बैठे साक्षात्कार कराके खींच लिया है, तो कमाल है ब्रह्मा बाबा के तपस्या की। सदा ही बाबा को एक ही लगन में देखा। ऐसे बाबा को देख अनेकों के पुराने कर्म बंधन कट गये और कहने लगे कि मेरा बाबा, अब अंत का समय आ गया, तो अंत घड़ी का ख्याल करना है, यह बाबा ने सिखाया है।

दुनिया तो हैप्पी न्यू इयर कहती है वो कोई हमारे लिए बड़ी बात नहीं है। जनवरी मास शुरू होता है तो बाबा जैसी हमारी भी त्याग और तपस्वी मूर्त रहे, ऐसी सूरत से सबको साक्षात्कार हो। इसके लिए बाबा कहते तुम्हारे चेहरे पर रूहानियत और रमणीकता हो। सदा हमारे नसीब में खुशी तब है जब मेरे से सब खुश हैं,

नसीबवान वो जो खुद संतुष्ट हो उनसे सब संतुष्ट हों। बाप जैसी सूरत-मूरत हो। बाप जैसे निमित्त भाव, नम्रता और निर्मानता हो। जिसके संग और सम्पर्क में आते हैं उन जैसा न हो, बाप जैसा मेरा वो स्वभाव संस्कार हो। इसके लिए मीठा बाबा कहते हैं जैसा हम संकल्प रखेंगे वैसे बाबा हमको बनायेगा। जरा सा भी इसमें अंश मात्र भी संकल्प में शक्ति नहीं होगी तो रह जायेंगे। तो बाबा कहते हैं इतना जो ज्ञान का, गुणों का, शक्तियों का और समय का भी बड़ा खजाना दिया है उसको जितना सफल करेंगे उतना सफलता स्वरूप बनते जायेंगे। सिर्फ सफलता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, यह जो कहता सोचता है वो करता नहीं, जब सफल करना ही है तो सोचने की बात ही नहीं है। कहना भी नहीं है, सोचना भी नहीं है। करना, कहना, सोचना बराबर हो। जो करना ही है तो पूछना किससे? क्या करें? यह सोचना व्यर्थ है। बाबा कहते अब इस व्यर्थ को छोड़ो, सोचने का छोड़ो, कहने तक नहीं आवे। हम अनुभव से कहते हैं कि जब हमारे अंदर स्वच्छता, सच्चाई, श्रेष्ठता होगी तब बाबा की कमाल अनुभव होगी। बाबा कहेंगे बच्चे की कमाल, बच्चा कहेगा बाबा की कमाल। बाबा ने ऐसा नेत्र दिया है जो इस नेत्र को भी ठण्डा कर देता है। यह नेत्र भी बड़े सुखदाई, सब सुख-शांति देने वाले हैं। दृष्टि ऐसी हो, वायुमण्डल ऐसा हो, जो किसी को ऐसा अनुभव हो, जो उसे वही बार-बार काम में आता रहे क्योंकि हम बच्चों को जो अनुभव है वही शक्ति दे रहा है, वही चला रहा है, आगे उड़ा रहा है। कई बाबा के बच्चे चलते आ रहे हैं, पर स्पीड बड़ी स्लो है क्योंकि उनके रास्ते में रूकावटें आयी हैं या औरों को रोक लिया है, इसलिए उन्हें आगे बढ़ने में लेट हो रहा है। तो इस मार्ग में अपना रास्ता भी क्लीयर हो और मेरे आगे बढ़ने में औरों को कोई तकलीफ न हो। हम बाबा के साथ-साथ चलें। कोई साथ नहीं चले हैं तो अब दौड़ी पहनें क्योंकि मंजिल दूर है, टाइम थोड़ा है इसलिए दौड़ने के बिगर पहुंचेंगे कैसे। इसके लिए सेकण्ड में पास्ट इज पास्ट करके हल्के हो जाओ तो दौड़ सकेंगे।

अपनी चलन और चेहरे से परमात्मा को प्रत्यक्ष करो



दादी हृदयमोहिनी, अति.मुख्य प्रशासिका

हम सभी बाबा के लाडले हैं। बाबा तो कहते हैं यह मेरे सेवा के साथी हैं, जो सेवा के साथी हैं वो सदा समीप रहते हैं। आजकल बाबा की बच्चों के प्रति जो भी शुभ आशायें हैं, उन्हें पूरा करने का उमंग हर एक के मन में आता है, इसके लिए हर एक प्लैन भी बनाते हैं। संकल्प भी करते हैं। लेकिन प्लैन को प्रैक्टिकल लाने में अंतर हो जाता है। जितना चाहते हैं उतना नहीं होता है। उसका कारण क्या है? इसके लिए तीन बातें हमें अपने जीवन में नोट करनी चाहिए तभी हम बाबा की आशा पूरी कर सकते हैं। बाबा जब होमवर्क देते हैं तो थोड़ा टाइम उमंग फुल रहता है, अटेंशन भी रहता है पीछे कारोबार में जाने से, जब हम एक-दो के सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हैं तो उसमें चलते-चलते अटेंशन ढीला हो जाता है। हमने अनुभव किया है - देह-अभिमान जो 63 जन्म रहा है, तो जब किसी बात में मेरा नाम आता है तो हम दूसरों को आगे कर देते हैं कि वह भी ऐसे करता है। हम अपनी गलती महसूस करें उसमें परसेंटेज हो जाती है। मानो कोई कहता है कि मेरी गलती नहीं है, लेकिन अगर इशारा मिलता है तो मम्मा कहती थी उसे संभालकर रखना चाहिए क्योंकि आगे के लिए वह काम आ सकती है। इसमें मूल बाबा ने दो शब्द कहे हैं - हद की मैं और मेरा, ये दो शब्द वास्तव में अवस्था को ऊपर नीचे करते हैं।

हनुमान को महावीर भी कहते हैं फिर पूंछ भी दिखाया है और उसी पूंछ से लंका भी जलाते हैं। मैं और मेरे की पूंछ जब तक नहीं जलायेंगे तब तक लंका जलेगी नहीं। तो इस मैं और मेरे को अपने प्रति नोट करें। तो एक अपने ऊपर अटेंशन रखें, दूसरा - उमंग-उत्साह नहीं गंवायें। तीसरा हिम्मत नहीं हारें। अपने चलन और

चेहरे द्वारा बाबा को प्रत्यक्ष करने पर बाबा अभी ध्यान खिंचवाता है। हमारे संकल्प में ज्यादा होता है, वाणी में थोड़ा कम फिर सम्बन्ध-सम्पर्क और कर्म में आते हैं तो और कम हो जाता है। कई कहते हैं हम तो रहते ही योग में हैं, लेकिन हमारा प्रैक्टिकल रूप भी तो दिखाई दे। दूसरे को भी दिखाई दे, इसमें अलग रहने की बात नहीं है लेकिन कारोबार में आते हुए अलग रहें यह बाबा आजकल चाहता है। कम्बाइण्ड सेवा करो, मंसा की भी करो आवाज की भी करो। बाबा ने कहा भले भाषण करते हो, लेकिन भाषण करने से उनको भासना आ जाये, वो कम होती है। अगर मंसा शक्ति के अनुभव में रहकर वाणी चला रही हूँ, अगर मैं उस अथॉरिटी के अनुभव में हूँ तो अनुभव करा सकती हूँ।

बाबा ने हमको एक शब्द बोला था कि कभी तुम सेवा करो तो ये नहीं समझो कि मैं स्टेज पर हूँ। मैं स्टेज पर हूँ, पर भाषण कराने वाला बाबा है। हमने जब पहली बार भाषण किया तो सभी ने कहा ये देवियां आयी हैं। आत्मा की खुशी, आत्मा की शक्ति अनुभव हो। भिन्न-भिन्न स्वमान स्मृति में रखने से हमारा चेहरा और चलन बदल सकता है। बाबा ने कहा था कि ओखली में मुंह डाला है तो मूसल से डर क्यों? वायुमण्डल, प्रकृति, स्टूडेण्ट यह सब तो होना ही है। ऊंची पढ़ाई है तो पेपर भी ऊंचा ही होना है। लास्ट पेपर कितना ऊंचा होगा! पेपर में अनुभवी होते आगे बढ़ते जायेंगे। दूसरा बदले नहीं बदले, अपनी शुभ भावना जरूर रखो। यह जब भावना होगी तो हमारा भी कल्याण हो जायेगा और हम नहीं बनेंगे तो कौन बनेंगे। हम सबके संकल्प में यही है कि हमें हाथ में हाथ दे करके साथ चलना ही है। बाबा जैसा बनना ही है। तो अपने आपको देखो कि मैंने बाबा से जो वायदा किया है कि बाबा आपके साथ ही चलना है। तो बाबा जैसा समान बनना है। बाबा शुरू से सभी बच्चों से बहुत प्यार करता है, सारे कल्प में ऐसा, इतना प्यार कोई नहीं कर पायेगा। तभी तो दिल से निकलता है इतना प्यार करेगा कौन...।

समुद्र के किनारे पांच बच्चे खेल रहे थे। उन्होंने रेत की पांच कुटीर बनाई और हर बच्चा विचार कर रहा है कि वह अपने कुटीर का नाम क्या रखे।

इतने में एक कफिर वहां से गुजर रहा था। बच्चों ने उसे रोककर कहा कि “बाबा हम मुश्किल में हैं” हमने रेत की कुटीर तो बनाई, परंतु कुटीर का नाम क्या रखना है यह हमें समझ में नहीं आ रहा है।

काफिर ने उन पांचों बच्चों से उनका परिचय पूछा, पहले बच्चे ने कहा - मेरे पापा पहलवान है, बलवान है, उसका नाम सुनते ही लोगों के छक्के छूट जाते हैं। दूसरे बच्चे ने कहा - मेरा पापा धनवान है, हमारे घर में रुपयों का भण्डार है। समाज में मेरे पापा का बहुत मान है। अच्छे-अच्छे लोग मेरे घर के सामने फेरी पहने आते हैं। तीसरे बच्चे ने कहा कि मेरे पापा ज्ञानवान है। अच्छे-अच्छे पंडित को वे ज्ञान में हरा देते हैं। उन्होंने बड़े-बड़े पदक प्राप्त किए हैं। चौथे बच्चे ने कहा कि ये सब बात तो ठीक है लेकिन मेरे पापा ‘सत्तावान’ हैं, मंत्री हैं इसलिए हमारे घर लोग उन्हें मस्का लगाने दौड़े चले आते हैं। सुबह से ही गुलदस्तों और भेंट में दी गई वस्तुओं का ढेर लग जाता है। और जब पांचवे बच्चे की बारी आई तो उसने कहा कि मेरे पापा स्वभाव से सत् प्रकृति के हैं। ‘सत्य’ के सिवाय उन्होंने कुछ भी इक्ठठा नहीं किया। यदि मेरे पापा का कोई बुरा भी करता है तो वे उसे उसकी गलती को माफ कर देते हैं, वे ऐसे सत्यवान हैं।

काफिर ने पहले बच्चे को कहा कि तुम्हारी कुटीर का नाम है - ‘बल’। दूसरे बच्चे को कहा कि तुम्हारी कुटीर का नाम है - ‘धन’। तीसरे बच्चे को कहा कि तुम्हारी कुटीर का नाम है - ‘ज्ञान’। चौथे बच्चे को कहा कि तुम्हारी कुटीर का नाम है ‘सत्ता’ और पांचवे बच्चे कि कुटीर का नाम बताते समय जोर से आंधी-तूफान आई और पहले चारों बच्चों के कुटीर आंधी-तूफान में छिन्न-भिन्न हो गये लेकिन पांचवें बच्चे की कुटीर बच गई। उसकी कुटीर का नाम बताते हुए काफिर ने कहा कि तुम्हारी कुटीर का नाम है - ‘सत्य’। सब नष्ट हो जाता लेकिन ‘सत्य’ अमर रहता है।

पहले चार बच्चों की कुटीर नष्ट हो गई थी इसलिए वे रो रहे थे। कफिर ने उन्हें आश्वासन देते हुए कहा कि जो होने वाला होता है वह होकर ही रहता है। इसलिए हमें किसी बात का दुःख नहीं करना चाहिए।

मानव को मानव को ही नहीं अपितु काल को भी नष्ट कर देने का साहस दिखाना चाहिए। जो काल के समक्ष हार नहीं मानता है वही शूरवीर कहलाता है। और बच्चे नष्ट हुई कुटीरों का रोना धोना कर दुःखी होकर घर चले गये।

अपनी दशा और बच्चों की दशा में है कोई अंतर...? हम भी बल, धन, ज्ञान और सत्ता के चक्कर रचकर ऐसे समझ लेते हैं कि यह शाश्वत है। परंतु काल का एक सपाटा हमारे अहंकार को आकाश से पटककर वास्तविकता का एहसास करा देता है।

दुःख को पराजित करने..

-ब.कु.गंगाधर

दुःख के समय व्यक्ति अकेला पड़ जाता है। उस समय सभी सगे-सम्बन्धी और दोस्त मुंह मोड़ लेते हैं। उस समय संत लोग सहिष्णुता का उपदेश देते हैं और सारा जग हंसता है। ऐसे समय पर सच्चा साथ और आश्वासन ही मनुष्य को, मन की शांति और हिम्मत मदद के रूप में प्राप्त होती है। इस सम्बन्ध में एक और बात यहां लिखना उचित होगा कि एक बार एक व्यक्ति को व्यवसाय में बहुत बड़ा नुकसान हुआ जिससे वह दुःखी हो गया और हताश होकर घर पहुंचा। और अपनी पत्नी से कहा कि हे प्रिय मैं बहुत दुःखी हो गया है, हमारे व्यवसाय में बहुत बड़ा नुकसान हो गया है और हमारे ऊपर दुःखों का पहाड़ गिर पड़ा है। हमारी सारी सम्पत्ति सरकार के हाथों में चली गई है। अब उसमें से निकलने का कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा है।

उसकी पत्नी बहुत हिम्मतवान और समझदार थी उसने थोड़ी देर मौन धारण किया और कहा कि “क्या सरकार आपको बेच सकती है?” नहीं, पति ने जवाब दिया। तो क्या सरकार मुझे बेच देगी? नहीं, पति ने जवाब दिया और कहा कि ऐसा तो हो ही नहीं सकता। तो फिर पत्नी ने कहा कि आप क्यों ऐसा कहते हो कि हमने सब कुछ गंवा दिया! आपके पास बुद्धि है, पत्नी है, संतान है, तो फिर क्यों ऐसा कहते हो कि मैंने सब कुछ गंवा दिया है, मैं पलायमान हो गया हूँ। जिसका अंतःकरण सलामत हो ऐसा अमीर है कोई? स्थूल साधन व पदार्थ के गुम होने का दुःख मत करना?” और फिर हताश पुरुष को सुखी होने का एक गुरु मंत्र मिला।

उसी प्रकार शत्रु पर विजय पाना तो आसान है लेकिन कठिन तो है दुःख पर विजय प्राप्त करना। हम दुःख को खत्म करने के बजाए दुःख को साथ देने का क्यूँ अपनाते रहते हैं। इसलिए दुःख बढ़ता ही जाता है। दुःख को जीतने का नाम ही चरित्रवान होना है।

बदलती सदियों ने मनुष्य के सामने सुख का अंबार खड़ा कर दिया लेकिन दुःख से लड़ने की शक्ति छीन ली है और उसे कंगाल बना दिया है। ज्यादा सुख-सुविधा का होना ही माना कि सहनशीलता और जोश के मजबूत महल में शेष भाग पृष्ठ 11 पर